युवा स्वयंसेवक

दीपांजली काकाती

स्वयंसेवी संगठन युवाओं को सामाजिक बदलाव का वाहक बनने के लिए प्रेरित कर रहे हैं और अनूठे कार्यक्रमों के ज़रिये उन्हें अपनी क्षमताओं को पहचानने में मदद कर रहे हैं।

दिसंबर की एक सर्द सुबह। घास को अपनी तेज़ी से चीरती हवा। लेकिन उसकी यह तेज़ी नई दिल्ली के संस्कृति स्कूल के कुछ बच्चों के बुलंद इरादों को डिगा पाने में नाकाम साबित हो रही है। ये बच्चे कड़ाके की ठंड के बावजूद अपने जूते उतार चुके हैं और अब धीरे-धीरे यमुना के किनारे-किनारे उसके पानी में चलने लगे हैं। इन बच्चों को नदी के मार्ग का नक्शा तैयार करना है और साथ ही यह भी पता लगाना है कि यमुना का काफ़ी हद तक साफ़ पानी दिल्ली में प्रवेश करने के साथ ही पूरी तरह गंदला और प्रदूषित क्यों हो जाता है।

विमलेंदु झा ने बच्चों को पर्यावरण की शिक्षा देने के मकसद से दिल्ली के तीन स्कूलों के लिए यह पाठ्यक्रम तैयार किया है। वह बताते हैं कि यमुना दिल्ली की पेयजल की 70 फ़ीसदी ज़रूरत को पूरा करती है और बावजूद इसके, इस जीवनदायिनी नदी में दिल्ली हर दिन तीन अरब लीटर से ज़्यादा रासायनिक कचरा और बिना साफ़ किया जल-मल डाल देती है। झा कहते हैं कि यमुना को साफ़ रखने की ज़िम्मेदारी न सिर्फ सरकार की है, बल्कि आपके और हमारे जैसे आम लोगों की भी है।

बच्चों को पर्यावरण चेतना का यह सबक दिल्ली के वसंत वैली, श्रीराम और संस्कृति स्कूल में सिखाया जा रहा है। इसके तहत उन्हें हालात का ज़मीनी तौर पर अहसास कराने के लिए भ्रमण कराया जा रहा है और इस कार्यक्रम को 'ब्रिज द गैप' नाम दिया गया है। यह कार्यक्रम बच्चों को पारिस्थितिकी -पर्यावरण को समझने में मदद देता है और इसके प्रति ज़िम्मेदारी महसूस कराने का प्रयास करता है। झा कहते हैं कि वह संपन्न स्कूलों के साथ काम करके आर्थिक संसाधन हासिल करते हैं और फिर इन्हें गरीब स्कूलों पर खर्च कर देते हैं। इन स्कूलों के बच्चों को पर्यावरण के प्रति जागरूक करने के लिए उनसे कोई पैसा नहीं लिया जाता।

विमलेंदु झा ने वर्ष 2000 में नई दिल्ली के सेंट स्टीफंस कॉलेज से स्नातक की उपाधि हासिल की, लेकिन 'वी फ़ॉर यमुना (यमुना के लिए हम)' अभियान शुरू करने के लिए आगे की पढ़ाई छोड़ दी। यमुना की हालत से दुखी झा ने दस लोगों के साथ मिलकर अपनी मुहिम की शुरुआत की। इसका मकसद था लोगों में इस बात की चेतना पैदा करना कि यमुना किस तरह प्रदूषित की जा रही है और उसे कैसे साफ़ रखा जा सकता है।

विमलेंदु झा नई दिल्ली के संस्कृति स्कूल के विद्यार्थियों को समझा रहे हैं कि यमुना नदी कैसे प्रदूषित होती है।

कुछ ही महीनों बाद उनकी इस मुहिम में पांच सौ से ज़्यादा स्वयंसेवक जुड़ गए। उनका संगठन अब एक पूर्ण स्वयंसेवी संगठन *स्वेच्छा – वी फॉर चेंज फाउंडेशन* में तब्दील हो चुका है। यह पर्यावरण संरक्षण, सशक्तीकरण और सामाजिक चेतना जगाने के लिए काम कर रहा है। *स्वेच्छा* ने पिछले छह साल में पांच हजार से ज़्यादा युवाओं को खुद के साथ जोड़ा है। झा कहते हैं कि, ''स्वयंसेवा का एक रूप वह है जब हम आपके किसी मकसद या खुद आपके लिए काम करते हैं और दूसरा रूप वह है जब स्वयंसेवकों को किसी काम को करने का संदेश दिया जाता है और वे उसे अपने दम पर आगे ले जाते हैं। यह एक बेहद रोचक मॉडल है, जहां परिवर्तन का लक्ष्य ही परिवर्तन का वाहक बन जाता है।''

युवाओं के ज़रिए सामाजिक बदलाव को बढ़ावा दे रहे कई संगठनों में नई दिल्ली का *प्रवाह* नाम का एक संगठन भी है। इसकी शुरुआत 1992 में कुछ युवा पेशेवरों के एक समूह ने की थी। यह लोगों को उनकी सामाजिक ज़िम्मेदारियों का अहसास दिलाने के लिए छात्रों और शिक्षकों के साथ मिलकर काम करता है। इसके कार्यक्रम युवाओं को सामाजिक मुद्दों को समझने और उन पर बहस करने में सक्षम बनाते हैं।

प्रवाह का स्माइल (स्टूडेंट्स मोबिलाइजेशन इनिशिएटिव फॉर लर्निंग थ्रू एक्सपोजर) कार्यक्रम 17 से 25 साल तक के ऐसे लोगों की मदद करता है जो किसी शहरी या ग्रामीण स्वयंसेवी संगठन के सदस्य होते हैं। इसके तहत युवा क्लबों के माध्यम से सामाजिक मुद्दों को उठाया जाता है और प्रचार अभियानों के जरिए उन पर जनता की राय बनाई जाती है। यह कार्यक्रम दिल्ली के 15 कॉलेजों के साथ ही देश के 22 अन्य शहरों में भी चलाया जा रहा है। मामला चाहे नुक्कड़ नाटकों के जरिए सामाजिक चेतना पैदा करने का हो या फिर सार्वजनिक वाहनों में होने वाले यौन उत्पीड़न पर बहस छेड़ने का, देश के युवा इस काम को बड़ी रचनात्मकता और जोश के साथ निभा रहे हैं। इस अभियान से जुड़े हर स्वयंसेवक से उम्मीद की जाती है कि वह कम से कम 80 घंटे दिल्ली में इस कार्य के लिए दे और चार से छह हफ़्ते का समय दिल्ली से बाहर के लिए निकाले।

स्वेच्छा के कार्यक्रमों में युवा बढ़-चढ़कर शिरकत करते हैं। 27 साल के विमलेंदु कहते हैं कि युवाओं को सिर्फ एक सही मंच की दरकार होती है और कोई ऐसा शख्स चाहिए होता है, जो उनकी ऊर्जा को सही दिशा दे सके। उनके मुताबिक, ''अपने तकरीबन सभी स्वयंसेवा कार्यक्रमों में सबसे महत्वपूर्ण काम जो हम करते हैं, वह है युवाओं को उनकी अपनी ताकत से रूबरू कराना – मैं कौन हूं, मैं कैसे दूसरों से अलग हूं, मेरी क्षमताएं क्या हैं और समाज में मेरा क्या स्थान है– इसका आकलन हमारे स्वयंसेवी खुद करते हैं।''

साभार: विमलेंदु झा

5 दिसंबर 2006 को अंतरराष्ट्रीय स्वयंसेवक दिवस पर नई दिल्ली के स्कूलों के छात्र-छात्राएं यमुना नदी को साफ करने के अभियान में भाग लेते हुए।

आत्मविकास स्वयंसेवा का मुख्य तत्व है और अक्सर स्वयंसेवक अपने आसपास के माहौल में सकारात्मक बदलाव लाने की इच्छा के साथ खुद सक्रिय होते हैं। इस प्रक्रिया में वे समूह में काम करना और संवाद कायम करना सीखते हैं। कई स्वयंसेवक ऐसे भी होते हैं जो सिर्फ वंचितों की मदद और एक संदेश का प्रसार करने के मकसद से इस काम से जुड़ते हैं। छात्रों के लिए स्वयंसेवा अपने बायो-डाटा को समृद्ध बनाने, नए हुनर सीखने और नए संपर्क कायम करने का भी एक अच्छा ज़रिया है। इससे उन्हें अपने कॅरिअर में भी मदद मिल सकती है।

सुशांत अरोड़ा *स्माइल* के एक स्वयंसेवक हैं। वह एक ऐसी टीम के सदस्य थे, जिसने एक लघु फ़िल्म *इट मैटर्स* बनाई थी। यह फ़िल्म वर्ष 2003 में युवाओं को वोट देने के लिए प्रेरित करने के मकसद से चलाए गए प्रचार अभियान 'ऑपरेशन ब्लैक बॉक्स' का एक हिस्सा थी। सुशांत का कहना है कि यह फ़िल्म मेरे लिए एक अनुभव ही नहीं, ग्रेजुएशन के पहले साल में यह शेखी बघारने का भी मौका था कि मैं एक फ़िल्म भी बना चुका हूं। इस प्रक्रिया में मैंने जो कुछ सीखा, उसने जानकारी के मामले में मुझे औरों से आगे खड़ा कर दिया।

स्वेच्छा के कार्यक्रमों में युवाओं की ऊर्जा को कई तरह से इस्तेमाल किया जाता है। पिछले साल संस्था द्वारा मॉनसून के दौरान चलाए गए वृक्षारोपण कार्यक्रम में दो सौ से ज़्यादा युवाओं ने शिरकत की। इन लोगों ने पूरी नई दिल्ली में पौधों का वितरण किया और लोगों को नुक्कड़ नाटकों के ज़रिए शहर में हरियाली को नया जीवन देने के लिए प्रेरित किया। स्वेच्छा द्वारा एक अनौपचारिक स्कूल भी चलाया जाता है और इसका नाम है पगडंडी स्कूल। इस स्कूल में झुग्गी-झोपड़ी में रहने वाले बच्चों को विश्वविद्यालय के स्वयंसेवक छात्र पढ़ाते हैं। ये छात्र इन बच्चों को सफ़ाई और सेहत के बारे में भी जानकारी देते हैं। *स्वेच्छा* का म्यूज़िक बैंड *जिगरी* इसके सामाजिक जिम्मेदारी के संदेश का प्रचार भी करता है।

विमलेंदु झा स्कूली छात्रों को ग्रामीण क्षेत्रों के चार दिन के भ्रमण पर भी ले जाते हैं। इसका मकसद बच्चों को ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के आपसी रिश्तों की जानकारी देना होता है। ऐसे ही एक भ्रमण के तहत पिछले साल सितंबर में छात्रों को मसूरी के आसपास के गांवों में ले जाया गया। इस दौरान श्रीराम स्कूल के अमीष भटनागर का परिचय ग्रामीण जीवन की वास्तविकताओं से हुआ। अमीष का कहना है, ''ग्रामीणों के साथ रहने और उनके रोजमर्रा के कामकाज में हाथ बंटाने से मुझे इस बात का अहसास हुआ कि शहर में मुझे क्या-क्या विशेष सुविधाएं हासिल हैं। इससे यह भी पता चला कि हमारे शहर किस तरह गांवों पर निर्भर हैं।''

उनके मुताबिक, ''महात्मा गांधी कहा करते थे कि दुनिया में हर किसी की ज़रूरत को पूरा करने के लिए पर्याप्त चीज़ें हैं, लेकिन किसी के लालच को पूरा करने के लिए ये पर्याप्त नहीं हैं। हम लोगों के लिए आज सफलता का मतलब यह हो गया है कि हम कितना ज़्यादा उपभोग कर सकते हैं और कितना ज़्यादा बर्बाद कर सकते हैं। लेकिन क्या यह हमारी धरती और हमारे समाज के लिए ठीक है? हमारा कार्यक्रम इन्हीं बातों के प्रति लोगों को जाग्रत करने का काम कर रहा है।''

शहरी स्कूली बच्चों के लिए प्रवाह के ग्रामीण इलाकों के भ्रमण के कार्यक्रम उनकी मशीनी ज़िंदगी की एकरसता को तोड़ने में सहायक बनते हैं। इनकी मदद से बच्चों को स्थायी विकास और संसाधनों के समान बंटवारे की अवधारणा को समझने में आसानी होती है। इस तरह के शिविर कई बार बच्चों की देखरेख करने वाले स्वयंसेवकों के लिए भी बहुत कुछ नया सीखने का मौका मुहैया कराते हैं।

इंटरनेशनल विजिटर्स लीडरशिप प्रोग्राम http://exchanges.state.gov/education/ivp/

फोटो: साभार प्रवाह

ऊपर: प्रवाह के नई दिल्ली के विद्यार्थी स्वयंसेवक राजस्थान के एक गांव के लोगों का दैनिक कार्यों में हाथ बंटा रहे हैं।

बाएं: प्रवाह के स्वयंसेवक आवास के अधिकार पर नई दिल्ली के एक मल्टीप्लेक्स के बाहर नुक्कड नाटक का मंचन करते हुए।

दिल्ली के संस्कृति स्कूल की एक छात्रा नेहा बुच एक स्वयंसेवक के बतौर महाराष्ट्र के वर्धा में लगे एक शिविर में थी। वह वहां एक शांत-शांत रहने वाली लड़की को याद करती है। शिविर के आखिरी दिन नेहा ने गांव की इस लड़की को कच्ची सड़क बनाते देखा। वह लड़की एक टोकरी में गाय का गोबर लेकर उसे सड़क पर डालती, हाथों से फैलाती और फिर उसे समतल करने के लिए उस पर कूदती थी। गांव की उस लड़की के चेहरे पर इस दौरान खुशी के जो निर्मल भाव आ रहे थे, नेहा उनको अब तक नहीं भूल पाई है। नेहा कहती है, ''वह पहला क्षण था जब मुझे सचमुच शांति मिली थी... मैं जानती हूं कि हर व्यक्ति में एक सच्ची क्षमता होती है। बस, ज़रूरत है तो पहचानने की।''

प्रवाह का स्माइल कार्यक्रम तीन हिस्सों में बंटा हुआ है। यह स्वयंसेवकों को एक-दूसरे के अनुभवों से सीखने के लिए प्रोत्साहित करता है। इसके पहले चरण में स्वयंसेवक एक-दूसरे से मिलते हैं और आपस में घुलते-मिलते हैं, तालमेल कायम करते हैं। कार्यक्रम के दूसरे चरण में उनको तीन से छह हफ़्ते के लिए दिल्ली के बाहर ले जाया जाता है, जहां वे दूसरे समुदायों की हकीकतों से वाकिफ़ होते हैं। आखिरी चरण में युवा स्वयंसेवक अपने अनुभवों का आदान-प्रदान करते हैं।

प्रवाह अमेरिका के अर्लिंगटन (वर्जीनिया) स्थित अशोका इन्नोवेटर्स फ़ॉर द पब्लिक के साथ मिलकर विश्वविद्यालयों को समाज से जोड़ने का काम भी कर रहा है। इसके तहत भारत के छात्रों और युवाओं को उद्यमी बनने के लिए प्रेरित किया जाता है। झा ने वर्ष 2005 में अमेरिकी विदेश विभाग के इंटरनेशनल विजिटर्स लीडरशिप प्रोग्राम के तहत अमेरिका का दौरा किया था। वहां उन्होंने देखा कि अमेरिकी स्वयंसेवी संगठन युवाओं के सहयोग से पर्यावरण कार्यक्रमों को किस तरह चला रहे हैं। वह कहते हैं, ''मैंने वहां बहुत कुछ सीखा। कई स्थानों का दौरा किया और विभिन्न संस्कृतियों को करीब से देखा-समझा। भ्रमण कार्यक्रम सचमुच आंखें खोल देने वाला था।''

नई दिल्ली की पत्रकार न्यूली पॉल कॉलेज छात्रा के तौर पर प्रवाह की एक चेतना यात्रा में राजस्थान के शाहबाद गांव गई थीं। वह कहती हैं, ''मैंने किताबों में गरीबी, सूखे और अशिक्षा के बारे में पढ़ा था। लेकिन जब इनको साक्षात रूप में देखा तो मेरी सोच ही पूरी तरह बदल गई।'' श्वेता रॉय कश्यप नई दिल्ली के भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान में शोधार्थी हैं। उन्होंने बिहार के मुंगेर जिले में सेवा नाम के स्वयंसेवी संगठन के साथ काम किया। वह लोगों के साथ सीधे काम करना चाहती हैं। वैसे उनकी शिकायत है कि स्वयंसेवा के क्षेत्र में कई लोग बिना पर्याप्त प्रतिबद्धता के पहुंच जाते हैं।

गुवाहाटी में पत्रकार रश्मि शर्मा ने एसपीसीए के साथ एक स्वयंसेवक के रूप में काम किया था और बीमार पशुओं की सेवा की थी। कॉलेज की पढ़ाई पूरी करने के बाद वह अमेरिका गईं और वहां एक न्यूज़ चैनल में नौकरी करने लगीं। नौकरी के दौरान उन्होंने विश्राम लिया और सिग्नल माउंटेन एनिमल शेल्टर तथा टेनेसी के चैटूंगा स्थित एक वृद्धाश्रम- मैनॉर हाउस में स्वयंसेवक के रूप में काम किया।

बातचीत में रश्मि कहती हैं, ''एसपीसीए के साथ किए गए मेरे काम ने मुझे अमेरिका में भी कुछ इसी तरह का काम करने के लिए प्रेरित किया।'' टेनेसी में बुजुर्गों के साथ बिताए गए समय ने उन्हें घर की याद कम आने में मदद की। वह कहती हैं, ''मेरे लिए सबसे शानदार क्षण वे थे जब वृद्धाश्रम के निवासी बड़ी उत्सुकता के साथ मुझसे भारतीय कहानियां सुनाने को कहते और मुझे अपने बचपन के दिनों के बारे में बताया करते।''

कृपया इस लेख के बारे में अपने विचार editorspan@state.gov पर भेजें।